विश्व न्याय मन्दिर

रिज़वान 2011

विश्व के बहाईयों को सम्बोधित

परम प्रिय मित्रों,

इस महिमामय अवधि के प्रारम्भ में जब हम हाल ही में अनावृत की गयी उस भव्य गुम्बद की चमक को देखते हैं, जो बाब की महान समाधि को विभूषित करती है, तो हमारी आँखें आनन्दित हो उठती हैं। शोग़ी एफ़ेन्दी द्वारा इसके लिये नियत की गयी उस स्वर्गिक दमक की स्थिति में इसे नवीनीकृत करने के बाद, वह गरिमापूर्ण इमारत एक बार फिर भूमि, सागर और आकाश पर दिन को और रात को चमकने लगी है तथा उस महान की महिमा और पवित्रता की गवाही दे रही है, जिसके पवित्र अवशेषों को इसमें समाधिस्थ किया गया है।

आनन्द की यह घड़ी, इस दिव्य योजना के प्रकटन के एक मंगलसूचक अध्याय की समाप्ति का समकालिक है। रचनात्मक काल की प्रथम शताब्दी -- जो कि अब्दुल-बहा के इच्छापत्र एवं वसीयत की उदार छाँव तले बिताये जाने वाले प्रथम सौ वर्ष हैं -- का केवल एक दशक शेष रह गया है। वर्तमान में समाप्त होने वाली पाँच वर्षीय योजना के बाद एक और योजना आ रही है, जिसकी विशिष्टताओं को पहले से ही सम्पूर्ण बहाई जगत के गहन अध्ययन का विषय बनाया जा चुका है। वास्तव में, महाद्वीपीय सलाहकार मण्डलों के सम्मेलन को सम्बोधित हमारे संदेश तथा बारह महीने पूर्व के रिज़वान संदेश के प्रति जतायी गयी प्रतिक्रिया से हम और अधिक संतुष्ट नहीं हो सकते थे। इन संदेशों की विषय-वस्तु की आंशिक समझ से संतुष्ट न होकर, मित्रगण, अकेले और समूहों में, औपचारिक बैठकों में और समय-समय आयोजित की जाने वाली सभाओं में इन संदेशों पर बार-बार लौट रहे हैं। अपने क्लस्टरों में पोषित किये जा रहे विकास के कार्यक्रमों में सक्रिय एवं सुविज्ञ सहभागिता से उनकी समझ गहरी हुई है। इसके परिणाम स्वरूप, विश्वव्यापी बहाई समुदाय ने कुछ ही महीनों में सचेतन रूप से वह आत्मसात् किया है, जिसकी, उसे अगले दशक में विश्वासपूर्ण शुरुआत की ओर आगे बढ़ने के लिए आवश्यकता है।

इसी अवधि के दौरान, कई महाद्वीपों में राजनीतिक उथल-पुथल और आर्थिक खलबली की बढ़ती हुई घटनाओं ने सरकारों और लोगों को हिला कर रख दिया है। समाजों को क्रान्ति की कगार पर खड़ा कर दिया गया है, और उल्लेखनीय मामलों में तो इसके भी परे। नेतागण पा रहे हैं कि न तो हथियार न ही धन, सुरक्षा सुनिश्चित कर पा रहे हैं। जहाँ-जहाँ लोगों की अभिलाषाएँ अतृप्त रही हैं, वहाँ अत्यधिक आक्रोश उत्पन्न हुआ है। हमें याद

आता है कि बहाउल्लाह ने धरती के शासकों को कितने सुस्पष्ट ढंग से चेतावनी दी थी कि: "तुम्हारी जनता तुम्हारा खज़ाना है। सावधान, कहीं तुम्हारा शासन ईश्वर के आदेशों का उल्लंघन न करे और तुम अपने आश्रितों को लुटेरों के हाथों में ही सौंप दो।" एक चेतावनी: परिवर्तन के लिये लोगों के जोश का नज़ारा कितना ही मोहक क्यों न हो, फिर भी यह याद रहे कि ऐसे स्वार्थ जो घटनाओं की दिशा का गलत इस्तेमाल करते हैं। और, जब तक कि दिव्य चिकित्सक द्वारा नियत किया गया उपचार लागू नहीं किया जाता, तब तक इस युग के क्लेश कायम रहंेगे और गहरे होते जायेंगे। इस दौर का एक सचेत प्रेक्षक, एक शोकजनक रूप से दोषपूर्ण विश्व व्यवस्था के, इस अनियमित किन्तु निर्मम त्वरित विघटन, को बड़ी आसानी से समझ लेगा।

फिर भी, इसका प्रतिरूप, वह रचनात्मक प्रक्रिया भी प्रत्यक्ष होती है जिसे धर्मसंरक्षक ने "बहाउल्लाह के उदीयमान धर्म" के साथ जोड़ा था और जिसका वर्णन उस "नई विश्व व्यवस्था के अगुआ" के रूप में किया था "जिसे प्रभुधर्म द्वारा शीघ्र ही स्थापित किया जायेगा।" इसके अप्रत्यक्ष प्रभाव -- विशेषकर युवाओं में -- उस भावना के उद्गार में देखे जा सकते हैं, जो सामाजिक विकास में योगदान देने की तीव्र इच्छा से उत्पन्न होती है। यह, प्राचीन सौंदर्य के अनुयायियों को दी गयी एक अनुकम्पा है कि यह तीव्र इच्छा, जो कि प्रत्येक भूमि में, मानव आत्मा से अनवरत उमड़ती है, उस कार्य में भावपूर्ण अभिव्यक्ति प्राप्त कर पा रही है, जिसे बहाई समुदाय द्वारा पृथ्वी के विभिन्न लोगों के बीच प्रभावशाली कार्य करने की क्षमता का निर्माण करने के लिये किया जा रहा है। क्या किसी भी सौभाग्य की तुलना इससे की जा सकती है?

इस कार्य में अन्तर्दृष्टि के लिये प्रत्येक अनुयायी अब्दुल-बहा की ओर देखे, जिनकी, मिस्र और पश्चिम की "अत्यन्त महत्वपूर्ण यात्राओं" की शताब्दी को इस समय चिन्हित् किया जा रहा है। उन्होंने प्रत्येक सामाजिक मंच पर -- घरों और मिशन सभागृहों में, गिरजाघरों और यहूदी-उपासनागृहों में, उद्यानों और सार्वजनिक चैकों में, रेल की बोगियों और समुद्री जहाज़ों में, क्लबों और समाजों में, स्कूलों और विश्वविद्यालयों में -- शिक्षाओं की व्याख्या की। सत्य की रक्षा में समझौता न करने वाले, किन्तु शिष्टाचार में अत्यन्त सौम्य, उन्होंने सार्वभौमिक दिव्य सिद्धान्तों को इस युग की आवश्यकताओं के साथ जोड़ा। बिना भेदभाव के उन्होंने, अधिकारियों वैज्ञानिकों, श्रमिकों, बच्चों, अभिभावकों, निर्वासितों, कार्यकर्ताओं, पुरोहितों, संदेहवादियों -- सभी को उनकी खास आवश्यकतानुसार प्रेम, विवेक और दिलासा दिया। उनकी आत्माओं को उन्नत करते हुए, उन्होंने उनकी धारणाओं को चुनौती दी, उनके परिप्रेक्ष्यों को नई दिशा दिखायी, उनकी चेतनाओं का विस्तार किया, और उनकी ऊर्जाओं

को संकेन्द्रित किया। उन्होंने शब्द और कर्म में ऐसी करूणा और उदारता प्रदर्शित की, कि हृदय पूर्णतः रूपांतरित हो गए। किसी को भी लौटाया नहीं गया। हमारी बड़ी आशा है कि इस शतवर्षीय अवधि में, मास्टर का बेमिसाल इतिहास का बारम्बार स्मरण उनके सच्चे अनुरागियों को प्रेरित करेगा। अपनी आँखों के सामने उनका उदाहरण स्थापित कर लो और उस पर अपनी दृष्टि जमा लो; इस योजना के लक्ष्य के प्रयास में इसे ही अपना स्वाभाविक मार्गदर्शक बना लो।

बहाई समुदाय की प्रथम वैश्विक योजना के आरम्भ में, शोग़ी एफ़ेन्दी ने अकाट्य भाषा में उन क्रमिक चरणों का वर्णन किया था जिनके द्वारा सियाहचाल में दिव्य ज्योति को प्रज्ज्वलित किया गया, जिसे बगदाद में प्रकटीकरण के दीपक से आच्छादित किया गया, जो एशिया और अफ्रीका के देशों में उसी तरह फैली जिस तरह यह अतिरिक्त दीप्ति के साथ एड्रीयानोपल में और बाद में अक्का में दमकी, महासागरों के पार शेष महाद्वीपों में प्रदीप्त हुई, तथा जिसके द्वारा यह दुनिया के राष्ट्रों एवं अधीनस्थ देशों में प्रगतिशील रूप से प्रसारित की जाने वाली थी।" इस प्रक्रिया के अंतिम भाग की विशेषता को उन्होंने "विश्व के शेष सभी क्षेत्रों में... उस ज्योति का भेदन" कहा, तथा "वह चरण" कहा "जिसमें, ईश्वर के विजयी धर्म का प्रकाश अपनी सम्पूर्ण शक्ति और प्रताप के साथ चमकता हुआ पूरी पृथ्वी पर फैल चुका होगा और उसे आच्छादित कर चुका होगा।" यद्यपि वह लक्ष्य अभी प्राप्ति से बहुत दूर है, फिर भी यह ज्योति अनेक क्षेत्रों में तीव्रता से दमक रही है। कुछ देशों में तो यह प्रत्येक क्लस्टर में चमक रही है। जिस देश में वह अखण्ड ज्योति सर्वप्रथम प्रज्ज्वलित हुई, वहाँ, यह उज्ज्वलता से जल रही है बावजूद इसके कि, जहाँ लोग इसे बुझा देना चाहते थे। जैसे-जैसे ईश्वर के हाथों से एक के बाद एक हृदय में एक के बाद एक मोमबत्ती प्रज्ज्वलित की जा रही है, वैसे-वैसे विभिन्न देशों में यह ज्योति पूरे-पूरे मुहल्लों और गाँवों में एक स्थायी आभा प्राप्त करती जा रही है; यह अपनी किरणें उन असंख्य पहलकदमियों पर डालती है जो एक जनसमूह के कल्याण को बढ़ावा देने के लिये की जातीं हैं। और हर प्रकरण में यह एक आस्थावान अनुयायी से, एक जीवंत समुदाय से, एक स्नेहमय आध्यात्मिक सभा से विकीर्ण होती है -- जो प्रत्येक अंधकार के विरुद्ध प्रकाश का एक संकेत-दीप है।

पावन दहलीज़ पर हम आग्रहपूर्वक प्रार्थना करते हैं कि इस अमर ज्योति के धारक, आप में से प्रत्येक, जब दूसरों को आस्था की चिंगारी पहुँचाएँ तो बहाउल्लाह की सामर्थ्यशाली पुष्टियों से घिरा रहे।

-विश्व न्याय मंदिर